Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

# ज्यां पाल सार्त्र का अस्तित्ववादी मानववाद: एक आलोचनात्मक अध्ययन

**Dr. Brijendra Kumar Tripathi***

Assistant Professor of Philosophy, Shri Krishna Mahila Mahavidyalaya Begusarai Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

***सार –*** *ज्यां पाल सार्त्र एकल व्यक्तिवादी, प्रकृति और मानव अस्तित्व में क्रमों की क्षणिक निश्चितता, असम्बद्धता और अपूर्णता की एक सैद्धांतिकी निर्मित करने वाले ऐसे दार्शनिक हैं जो अपने अनुभवों और घटनाओं की तर्क-समबद्धता में एक अस्तित्ववादी संयोग ढूँढ़ते ढूँढ़ते समाजवादी सामूहिकता तक पहुँचते हैं लेकिन उन सामूहिक प्रयासों की परिणति को वे फिर भी व्यक्ति की स्वतंत्रता में ही समन्वित होते हुए देखते हैं। उद्धेश्यहीनता, अर्थहीनता और निरन्तर मृत्युबोध की स्थितियॉ कब समय की क्रुरता और अन्यायों से लड़ते लड़ते छिन्न-भिन्न हो गई सार्त्र को स्वयं इस का अहसास तब हुआ जब उन्हें दूसरे विश्वयुद्ध में नाजियों ने बन्दी बना लिया। कुछ हो सकने की प्रतीक्षारत रिक्तता में बैठे रहने का अस्तित्वादी दर्शन उस समय की विस्तृत, विशाल लेकिन क्रूर ऐतिहासिक घटनाओं की पृष्ठभूमि में प्रमाणित से अधिक खंडित हुआ। सार्त्र के अस्तित्वादी दर्शन का प्रभाव उनके जीवन काल में ही कम पड़ गया था। उन्होंने व्यक्ति की स्वतन्त्रता और उसकी नियन्ता स्थिति के साथ सामाजिक जिम्मेवारी का समावेश करके अस्तित्ववाद को मार्क्सवाद की एक अंतर्धार के रूप में देखने की ईमानदार कोशिश की। वस्तुतः सार्त्र का अस्तित्ववादी दर्शन व्यक्ति की प्रधान्यता को न केवल स्वीकार करता है अपितु प्रत्येक मूल तत्वों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और सभी तत्वों का केन्द्र व्यक्ति को ही मानता है। व्यापक फलक पर वह रेखांकित करता है कि अस्तित्ववाद मानव के अस्तित्व और उसकी स्वतंत्रता का पक्षपोषक है, उसके चिंतन के केन्द्र में व्यक्ति अथवा मानव है और उसका अस्तित्ववादी दर्शन मानववाद के प्रत्येक पहलुओं को गंभीरता से स्पष्ट करता है। प्रस्तुत शोध-आलेख अस्तित्ववाद के संदर्भ में ज्यां पाल सार्त्र के विचारों को क्रमबद्ध करता है जिसके चिंतन का मूल मानव है, जो अपनी चेतना के माध्यम से अपने स्वयं के मूल्यों का निर्माण करता है।*

***कुंजी शब्द -*** *मूल्य, मृत्युबोध, पूर्वकल्पित, आत्मपरकता, मानववाद, नियन्ता*

----------X----------

**प्रविधि और तथ्य संकलन**

प्रस्तुत शोध-आलेख विवेचनात्मक प्रविधि पर आधारित है। अध्ययन से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन द्वितीय स्त्रोतों से किया गया है। कतिपय महत्वपूर्ण ग्रन्थ, शोध-आलेख और शोध-प्रबन्ध द्वितीयक स्त्रोत के तहत सहायक सामग्री हैं जिनका अवलोकन कर प्राप्त तथ्यों को इस प्रकार क्रमबद्ध किया गया है ताकि यह सम्पूर्ण अध्ययन एवं इससे प्राप्त निष्कर्ष क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से ज्ञानवर्द्धन के लिए लाभकारी और सार्थक साबित हो सके। विषय से संबंधित वास्तविकताओं को समझने में यह शोध-आलेख एक उपयुक्त आधार होगा।

**विषय-प्रवेशः-**

**(अस्तित्ववाद का उद्भव)**

अस्तित्ववाद का उद्भव प्राचीन काल में ही हो चुका था। अरस्तू, एक्वीनास तथा नीत्शे में इस चिंतन को देखा जा सकता है। आधुनिक काल में इसकी शुरूआत 1813 में डेनमार्क निवासी सोरेन कीर्कगार्द द्वारा की गयी इसलिए सोरेन कीर्कगार्द को अस्तित्ववाद का जनक माना जाता है। बीसवी शताब्दी में ज्यां पाल सार्त्र ने अस्तित्ववादी दर्शन को एक गति प्रदान की। सार्त्र मूलतः नास्तिक अस्तित्ववादी हैं। सार्त्र का अस्तित्ववाद हाइडेगर की महान रचना 'बीइंग एंड टाइम' (1927) पर आधारित थी। सार्त्र ने तर्क दिया कि अस्तित्ववाद का केन्द्रिय प्रस्ताव यह है कि अस्तित्व सार से पहले होता है, जिसका अर्थ

www.ignited.in

है कि व्यक्ति स्वयं को मौजूदा रूप से आकार देते हैं और पूर्वकल्पित और पूर्वप्राथमिक श्रेणियों, "एक सार" के माध्यम से नहीं माना जा सकता है। मनुष्य अपनी चेतना के माध्यम से अपने स्वयं के मूल्यों का निर्माण करता है और अपने जीवन के लिए एक अर्थ निर्धारित करता है।

**अस्तित्ववाद का अर्थ**

अस्तित्ववाद के मूल शब्द है "अस्ति" जो कि संस्कृत के शब्द, 'अस्' धातु से बना है। जिसका अर्थ "होना' तथा अंग्रेजी का 'Existentialism' 'Ex' एवं 'Sistere' से बना है जिसमें 'Ex' अर्थ है बाहर और 'Sistere' का अर्थ है, खड़े रहना। अतः अस्तित्ववाद वह दार्शनिक दृष्टिकोण है जिसमें व्यक्ति अपने अस्तित्व को विश्वपटल पर स्पष्ट रूप से रखने का प्रयास करता है।

ज्यां पाल सार्त्र समय के हाथ आया हुआ विडम्बनाओं का ऐसा गोलक थे जो घटनाओं के दबाव में खुलता और बंद होता रहा। इसी प्रक्रिया में उनका दर्शन अर्थ प्राप्त करता है। उनका जीवन अभिशप्त स्थितियों के घेरों को तोड़ कर एक सक्रिय सामाजिक जुझारू बौद्धिक के रूप में सामने आया। उद्धेश्यहीनता, अर्थहीनता और निरन्तर मृत्युबोध की स्थितियॉ कब समय की क्रुरता और अन्यायों से लड़ते लड़ते छिन्न-भिन्न हो गई सार्त्र को स्वयं इस का अहसास तब हुआ जब उन्हें दूसरे विश्वयुद्ध में नाजियों ने बन्दी बना लिया। कुछ हो सकने की प्रतीक्षारत रिक्तता में बैठे रहने का अस्तित्वादी दर्शन उस समय की विस्तृत, विशाल लेकिन क्रूर ऐतिहासिक घटनाओं की पृष्ठभूमि में प्रमाणित से अधिक खंडित हुआ। सार्त्र के अस्तित्वादी दर्शन का प्रभाव उनके जीवन काल में ही कम पड़ गया था। उन्होंने व्यक्ति की स्वतन्त्रता और उसकी नियन्ता स्थिति के साथ सामाजिक जिम्मेवारी का समावेश करके अस्तित्ववाद को मार्क्सवाद की एक अंतर्धार के रूप में देखने की ईमानदार कोशिश की थी।

सार्त्र अस्तित्वाद के जनक माने जाते हैं, उनका मानना था कि प्रत्येक विचारधारा से ऊपर व्यक्ति का अपना अस्तित्व होता है किसी भी परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व पर निर्णय लेने मे स्वतंत्र होना चाहिए। सार्त्र विश्व के एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्होने साहित्य का नॉबेल पुरस्कार यह कहते हुए लौटा दिया कि इस प्रकार के सम्मान से व्यक्तियों में असमानता सिद्ध होती है, वह अपनी विचारधारा पर अडिग रहते हुए पुरस्कार लौटा दिए।

अस्तित्वाद एक ऐसी विचारधारा है जो 19 वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान सामने आई। इसके मूल में आधुनिकता की यह दृष्टि निहित थी कि एक मनुष्य सोचता, विचारता, अनुभव करता, जीवन व्यतीत करता है। ज्या पाल सार्त्र के अनुसार यह विचार मूलतः यह मानववाद है। उनका कथन है कि, "हमारे लिए 'अस्तित्ववाद' शब्द का अर्थ एक ऐसा सिद्धांत है जो मानव जीवन को संभव बनाता है और जो यह मानता है कि प्रत्येक सम्य और क्रम का संबध परिवेश तथा उसकी आत्मपरकता में निहित होता है।" आत्मपरकता को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि आत्मपरकता का संबंध व्यक्ति स्वातंत्र्य से है अर्थात्, "मनुष्य इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है जैसा खुद को बनाता है या कि वह स्वयं का निर्माण करता है।"

सार्त्र ने अस्तित्ववाद को मानववाद माना है। उनका कहना है कि मनुष्य स्वयं का निर्माता है। वह जैसा स्वयं को बनाता है उसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं है। मनुष्य अपने बारे में जैसा सोचता है, वैसा नहीं होता, बल्कि वैसा होता है, जैसा वह संकल्प करता है, वह अपने अस्तित्व की ओर बढ़ने के बाद ही अपने बारे में संकल्प करता है। मनुष्य इसके अतिरिक्त कुछ भी नही है वह जैसा चाहे स्वयं का निर्माण कर सकता है और यही अस्तित्ववाद का पहला सिद्धांत है। अस्तित्ववाद की मान्यता है कि सर्वप्रथम व्यक्ति का अस्तित्व है फिर उसका सार है। अगर व्यक्ति ही नहीं तो सार का क्या अर्थ होगा? व्यक्ति में भी 'मैं' की स्थिति को अस्तित्ववाद अतिआवश्यक मानता है। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण मानता है। बाह्य परिस्थितियाँ, मान्यताएँ, परंपराएँ व्यक्ति पर थोपा नहीं जाना चाहिए उसे अपने जीवन का चुनाव स्वयं करना है और अपने विषय में निर्णय स्वयं लेना है। सार्त्र का अस्तित्ववाद मानव केन्द्रित दृष्टिकोण है। यह मानव के अस्तित्व या सत्ता का विश्लेषण करता है इसलिए इसे मानववाद का दर्शन भी कहा जाता है। यह ऐसे तमाम दर्शन का विरोध करता है जो व्यक्ति की सत्ता पर नहीं बल्कि विश्व की सत्ता पर विचार करता है। सार्त्र दर्शन को सम्पूर्ण मानव जीवन के लिए सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत करता है। दर्शन रूपी यह सिद्धान्त मानव जीवन के सभी पहलुओं का एक सामान्यीकरण है।

सार्त्र ने अस्तित्ववाद को मानव की स्वतंत्रता के साथ जोड़ा है। सार्त्र के अनुसार मानव को अपने आप पर, दूसरों के साथ और दुनिया के साथ एक पूर्ण जिम्मेदारी होने की शर्त के साथ, बिल्कुल स्वतंत्र होना चाहिए। मनुष्य स्वतंत्र है, उसे उसका भाग्य मालिक बनाता है, इसलिए मनुष्य का अस्तित्व इसके सार से पहले है क्योंकि मानव जन्म लेने पर सार नहीं रखता है और अपने बारे में स्पष्ट अवधारणा नहीं रखता है, जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाता है वह स्वयं अपने अस्तित्व को अर्थ देता है। मानव अपने प्रत्येक कार्य को अनंत विकल्पों में से चुनने के लिए स्वतंत्र है, मौजूद विकल्पों के समूह के बीच कोई

सीमा नहीं है। विकल्पों की इस उपलब्धता के लिए जरूरी नहीं है कि यह आनंददायक या लाभकारी हो। अतः सार्त्र के तथ्य में अभ्यास में स्वतंत्रता और चुनने की क्षमता शामिल है। नैतिक कानून, नैतिकता और व्यवहार के नियम जो मानव पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए उपयोग करता है, अनिवार्य रूप से व्यक्तिगत पसंद पर आधारित होते हैं। सार्त्र ने पुष्टि की कि मानव वह है जो अपनी स्वतंत्रता में नैतिक सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने का फैसला करता है। व्यक्तिगत पसंद के आधार पर कार्य करना सभी स्वतंत्रता के लिए सम्मान पैदा करना है।

## आलोचना

अस्तित्ववाद हीगल के दर्शन के प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हुआ है। यह व्यक्ति को पुनः दर्शन का केन्द्र मानता है। इसकी मान्यता है कि व्यक्ति के अस्तित्व, चेतना, अनुभव व भावनाएं ही स्वयं के व्यक्ति के लिए और दर्शन के लिए महत्वपूर्ण विषय हैं। प्लेटो, हीगल आदि विचारक सर्वप्रथम मूल तत्व या विवेक या विचार जो प्रधानता देते हैं जबकि अस्तित्तववाद अस्तित्व को प्रधानता देता है और यह मानता है कि अस्तित्व से ही मूल तत्व का निर्माण होता हैं लेकिन इनके विचारों में व्यावहारिकता या समरूपता नहीं है। अस्तित्ववाद दर्शन के अनेक विचारक विचारों में समानता नहीं रखते हैं तथा अपनी स्थिति के अनुसार उसमें परिवर्तन करते रहते हैं। जिस प्रकार जोड ने समाजवाद के संदर्भ में कहा कि, ‘‘समाजवाद ऐसी टोपी है जिसका आकार बिगड़ गया है क्योंकि हर कोई इसे अपने तरीके से पहनता है’’, ठीक उसी प्रकार अस्तित्वाद के संबंध में सार्त्र ने कहा कि, ‘‘अस्तित्ववाद एक ऐसे कैप की तरह है, जिसे अलग-अलग लोग अलग-अलग तरीके से पहनते हैं।’’ सार्त्र अपने इस कथन के संदर्भ में एक दृष्टान्त प्रस्तुत कर एक ऐसी महिला का उदाहरण दिया जो अपशब्द बोलती है और बाद में क्षमा मांगती है, यह कहते हुए कि ‘‘माफ कीजिए! हम अस्तित्ववादी हैं। इस प्रकार अस्तित्ववादियों का कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है। यह किसी एक विचारधारा अथवा एक व्यवस्था के पक्ष में नहीं है तथा यह मिश्रित विचारधारा में विश्वास करता है। सार्त्र अस्तित्ववाद को दर्शन के रूप मे नहीं, दृष्टि के रूप में उद्भाषित करता है। यह मानव जीवन के कुछ अंशों को रेखांकित करता है, किन्तु यह मानव जीवन का समग्र सिद्धान्त नहीं बन सकता। सार्त्र ने मानव अस्वितत्व को स्वतंत्र अवश्य माना है किन्तु अन्य वस्तुओं के कारण मानव की स्वतंत्रता सीमित हो जाती है, उसके मार्ग में अवरोधक उत्पन्न हो जाते हैं जिनके कारण वह अपनी सभी सम्भावनाओं को साकार नहीं बना पाता। व्यक्ति की स्वतंत्रता असीमित नहीं है और उसे ऐसे तथ्यों को स्वीकार करना होगा जो मानव की स्वतंत्रता को सीमित बनाते हैं।

## निष्कर्ष

अस्तित्व अर्थ से पहले का आधार है जो कि मानव और मानवजीवन के अस्तित्व को पूर्वनिर्धारित न मानकर उसे प्रक्रियागत मानता है। सार्त्र अपने विचारों से यह जानने का प्रयास कियाकि मनुष्य में भावना आदिकी बहुत ज्यादा कमी हो री है। औद्योगिकीकरण ताकि युद्धों के कारण व्यक्ति के निजी सोच, विचार तथा व्यक्तित्व का बहुत नुकसान हुआ है जिसके कारण आज वह एक स्वतंत्र जीवन का आनंद नहीं उठा पा रहा है। अतः अस्तित्ववाद अधिक से अधिक मानव जीवन को समझने का दृष्टिकोण है। यह एक सक्रिय आंदोलन का रूप न ले सका हो लेकिन यह वर्तमान में भौतिकवादी सभ्यता के युग में व्यक्ति को उसकी मान्यता, उसकी विशेषता, उसकी प्रतिष्ठा, गरिमा और उसके सर्वोपरि पहचान की अनुभूति करानेवाली एक महत्वपूर्ण विचारधारा और दर्शन है।

## तथ्य संकलन हेतु संदर्भ स्त्रोत:-

1) हिंदी समय, कृष्ण किशोर, ISSN 2394-6687 UGC Journal No.41485

2) विकिपिडिया (सार्त्र का अस्तित्ववाद ’- लेखिका प्रभा खेतान, वर्ष 1984 )

3) सार्त्र और मार्क्सवाद, पोर्टल मार्क्सवाद और क्रांति, Marxismoyrevolucion.org

4) Govindbhai k. Mundava, International journal of research in all subjects in multy languages, Volume-2, Issue-4, 2014, ISSN 2321-2853.

5) Soren, Kierkegaard (1984), Concluding and Unscientific Postserilot, Prinception University Press, London.

6) Jean-Paul-Sarte, Existentialism Is Humanism, 1948.

7) Jean-Paul-Sarte; Being and Nothingness, ISBN-13978.0671867805

8) Jean-Paul-Sarte; Critique of Dialectical Reason 1976 (Voluem-1); 1991 (Volume-2)

**Corresponding Author**

**Dr. Brijendra Kumar Tripathi***

Assistant Professor of Philosophy, Shri Krishna Mahila Mahavidyalaya Begusarai Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga